بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 28.11 .25

तबूक नामक युद्ध के परिवेश में नबी करीम ﷺ के जीवन चरित्र का बयान।

सारांश ख़ुत्ब: जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (नबुव्वत की तिथि 28 ,1404 हश) 28.11. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- तबूक की यात्रा के विषय में और अधिक विवरण जो मिलते हैं वे आज बयान करूंगा। पिछले खुत्बों में बयान हो चूका है कि कुछ मुनाफ़िकों ने युद्ध पर जाने से इनकार किया था तथा भिन्न भिन्न बहाने किए थे परन्तु मदीना तशरीफ़ लाने के बाद भी मुनाफ़िकों के साथ न आने के अनेक बहानों का वर्णन मिलता है, बल्कि क़ुरआन शरीफ़ में भी इसका वर्णन है। आँहज़रत ﷺ की सुन्नत थी कि जब यात्रा के बाद मदीना पधारते तो पहले मस्जिद में पहुँच कर दो रक्अत नमाज़ अदा करते। अतः नफ्लें पढ़ने के बाद आप स. मस्जिद में ही ठहर गए और लोग आप स. से मिलने तथा दर्शन करने के लिए उपस्थित होने लगे। इसी प्रकार वे लोग जो अपने दुर्बल ईमान एवं पाखंडी स्वभाव के कारण साथ नहीं गए थे, वे भी आने लगे। सीरत के लेखकों ने लिखा है कि ये लोग लगभग 80 थे, किन्तु कुछ कथनों के अनुसार इससे भी अधिक लोग थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे उनके

प्रत्यक्ष बहाने मान लिए और उनसे बैअत ली तथा उनके लिए मगफिरत की दुआ की और उनकी आंतरिक धारणाओं को अल्लाह पर छोड़ दिया।

परन्तु इन मुनाफ़िकों का यह दोष क्षमा योग्य नहीं था इस लिए अल्लाह तआला ने इनके बारे में नबी अकरम ﷺ को वही के माध्यम से फ़रमा दिया था कि ये ऐसे अपवित्र लोग हैं कि खुदा इनसे अब प्रसन्न नहीं होगा। अतः इन लोगों के विषय में अल्लाह तआला ने सूरः तौबा में ख़बर दी। तबूक के युद्ध में पीछे रह जाने वालों पर अल्लाह तआला ने अपनी घोर अप्रसन्नता प्रकट की, इन लोगों को घोर पापी कहा, नबी अकरम ﷺ को इनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ने तथा इनकी कब्रों पर दुआ करने से रोक दिया और यह पाबंदी भी लगा दी कि भविष्य में वे किसी अभियान में भाग न लें और न ही किसी युद्ध में शामिल होंगे।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि तबूक की यात्रा में पीछे रह जाने वाले चार प्रकार के लोग थे। पहले वे भाग्य शाली लोग जो रसूलुल्लाह स. के निर्देश पर किसी दायित्व के निर्वाह के लिए पीछे रहे, जैसे- हज़रत अली रज़ी, इब्ने उम्मे मकतूम रज़ी. और मुहम्मद बिन मसलमा रज़ी. इत्यादि। दूसरी तरह के वे लोग हैं जो असहाय, रोगी एवं दुर्बल थे, अथवा अति निर्धन एवं ग़रीब लोग थे और सवारी इत्यादि की व्यवस्था करने में असमर्थ थे। आँहज़रत ﷺ ने इनके बारे में फ़रमाया कि वे हर जगह हमारे साथ साथ ही थे। तीसरे मुनाफ़िक़, जिनके चरित्र की कठोर निन्दा की गई तथा क़ुरआन करीम में सदेव के लिए उनके बारे में अप्रसन्नता एवं कठोर दंड एवं कठोर चेतावनी का आदेश पारित हुआ। चोथे वे लोग थे जो केवल सुस्ती के कारण शामिल न हुए थे और पीछे रह गए थे। इनमें तीन सहाबी रज़ी. विशेष रूप से वर्णन योग्य हैं, और वे हैं- हज़रत कअब बिन मालिक रज़ी, हज़रत मुरारह बिन रबीअ रज़ी. और हज़रत बिलाल बिन उमय्या रज़ी.।

इन तीनों सहाबियों के सम्बन्ध में क़ुरआन करीम में आयत भी नाजिल हुई। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि عَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا अर्थात वे तीन जो पीछे छोड़ दिए गए, इनकी घटना का विवरण यूं बयान हुआ है, बुख़ारी की एक रिवायत में हज़रत कअब बिन मालिक रज़ी. ने स्वंय यह घटना बयान की है। फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने यात्रा पर जाने की तय्यारी आरम्भ कर दी, और आप स. के साथ मुसलमानों ने भी। मेरा भी इरादा पक्का थे लेकिन सुस्ती थी, तय्यारी नहीं होती थी, मैं टाल मटोल ही करता रहा, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह ﷺ एक सुबह रवाना हो गए और मैंने अपनी यात्रा की तय्यारी में से कुछ भी पूरा न निमटाया था। मैंने सोचा कि आप स. के जाने के बाद एक दिन अथवा दो दिनों में तय्यारी कर लूँगा और फिर उनसे जा मिलूंगा। यही हाल रहा, यहाँ तक कि तेज़ी से यात्रा करते हुए सेना दूर निकल गई। रसूलुल्लाह ﷺ के जाने के बाद जब भी मैं लोगों में निकलता और उनमें चक्कर लगाता

तो मुझे यह बात दुखी कर देती कि मैं ऐसे ही व्यक्ति को देखता जिन पर पाखण्ड का दोष था, अथवा दुर्बलों में से ऐसा व्यक्ति जिसको अल्लाह ने असहाय कर दिया था। हज़रत कअब बिन मालिक रज़ी. कहते हैं कि जब मुझे यह सूचना मिली कि आप स. वापस आ रहे हैं तो मुझे चिन्ता हुई और मैं झूटी बातें सोचने लगा कि कल किस बहाने से आप स. की नाराज़गी से बच जाऊं। जब यह कहा गया कि रसूलुल्लाह ﷺ आ चुके हैं तो मेरे दिल में से समस्त झूठे विचार उड़ गए और मैंने समझ लिया कि मैं कभी भी आप स. के क्रोध से बचूंगा नहीं जिसमें झूठ हो, इस लिए मैंने आप स. से सच सच बयान करने की ठान ली।

रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ ले आए तो पीछे रह जाने वाले लोग आप स. के पास आए और आप स. से क्षमा मांगने एवं क़समें खाने लगे। ऐसे लोग अस्सी से कुछ ऊपर थे। रसूलुल्लाह स. ने उनसे उनके प्रत्यक्ष बहाने मान लिए तथा उनकी बैअत ली। फिर मैं आप स. के पास आया, जब मैंने आप स. को सलाम किया तो आप स. एक नाराज़ व्यक्ति की भांति मुस्कुराए। आप स. ने मुझसे पूछा कि किस बात ने तुम्हें पीछे रखा, क्या तुमने सवारी नहीं ख़रीदी थी? मैंने कहा कि जी हाँ, अल्लाह की क़सम! मैं ऐसा हूँ कि यदि आप स. के अतिरिक्त दुनिया के लोगों में से किसी और के पास बैठा होता तो मैं समझता हूँ कि मैं अवश्य ही कोई बहाना बनाकर उसकी नराज़गी से बच जाता। मुझे ख़ुशबयानी (मधुर भाषी होने की क्षमता) दी गई है। किन्तु अल्लाह की क़सम! मैं ख़ूब समझ चुका हूँ कि यदि मैंने आप स. से कोई ऐसी झूठी बात बयान की जिससे आप स. मुझसे प्रसन्न हो जाएं तो अल्लाह जल्दी ही आप स. को मुझ पर नाराज़ कर देगा, और यदि आप स. से सच्ची बात बयान करूंगा, जिस पर आप स. मुझसे नाराज़ हों तो मैं इसमें अल्लाह की ओर से क्षमा की आशा रखता हूँ।

कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! मेरे पास कोई बहाना नहीं था, अल्लाह की क़सम! मैं कभी भी ऐसा समृद्ध एवं आर्थिक सुदृढ़ नहीं हुआ था जितना उस समय था जब आप स. से पीछे रह गया था। रसूलुल्लाह ﷺ ने यह सुन कर फ़रमाया- इसने तो सच बयान कर दिया, उठो जाओ, यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हारे सम्बन्ध में कोई निर्णय करे।

मेरे अतिरिक्त मुरार बिन रबीअ उमरी और बिलाल बिन उमय्या ने भी वही कहा जो मैंने कहा था, और उनको भी वही जवाब मिला जो मुझे दिया गया। हज़रत कअब रज़ी. कहते हैं इसी बीच गस्सान के राजा की ओर से एक पत्र मुझे मिला जिसमें लिखा था कि मुझे यह पता चला है कि तुम्हारे साथी ने तुम्हारे साथ कठोर व्यवहार करके तुम्हें अलग थलग छोड़ दिया है, और तुम्हें तो अल्लाह ने किसी ऐसे घर में पैदा नहीं किया था कि जहां अपमान हो और तुम्हें व्यर्थ कर दिया जाए, तुम हमसे आकर मिलो, हम तुम्हारा स्वागत करेंगे। जब मैंने यह पत्र पढ़ा तो मैंने कहा कि यह पत्र एक और परीक्षा है। मैं पत्र को लेकर एक तंदूर की ओर

गया और वह पत्र उसमें फेंक दिया। जब पचास रातों में से चालीस रातें बीत गईं तो क्या देखता हूँ कि रसूलुल्लाह ﷺ का सन्देश वाहक मेरे पास आ रहा है। उसने कहा कि रसूलुल्लाह स. तुमसे फ़रमाते हैं कि अपनी पत्नियों से अलग हो जाओ। मैंने पूछा कि क्या मैं उसे तलाक़ दे दूं? अथवा क्या करूं? उसने कहा उससे अलग रहो और उसके निकट न जाओ। आप स. मेरे दोनों साथियों को भी ऐसे ही कहला भेजा।

जब पचासवीं रात की सुबह को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ चुका और मैं उस समय अपने घरों की छतों में से एक छत पर था और मैं उसी अवस्था में बैठा हुआ था जैसे अल्लाह ने फ़रमाया था, अर्थात मुझ पर मेरी जान तंग हो चुकी थी और मुझ पर धरती भी विशाल होने के बावजूद तंग हो गई थी। इसी बीच मैंने एक पुकारने वाले की आवाज़ सुनी कि ऐ कअब बिन मालिक! तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो! मैं यह सुन कर सजदे में गिर पड़ा और समझ गया कि कष्ट दूर हो गया। यह सुन कर सब लोग हमें शुभ समाचार देने लगे। हज़रत कअब कहते हैं कि जब मैं मस्जिद में पहुंचा और रसूलुल्लाह ﷺ को अस्सलाम अलैकुम कहा तो आप स. का चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था कि तुम्हें मुबारक हो! अति उत्तम एवं ख़ुशी के दिन की, उन दिनों में से जब से तुम्हारी माँ ने तुम्हें जन्म दिया है, तुम पर बीते हैं। मैंने पूछा कि या रसूलुल्लाह स! क्या यह ख़ुश ख़बरी आप की ओर से है या अल्लाह की ओर से? आप स. ने फ़रमाया कि नहीं, बल्कि अल्लाह की तरफ़ से।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इसका शेष भाग जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने बयान फ़रमाया है, अपने अंदाज़ में, वह इंशाल्लाह आगे बयान करूंगा।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम हाफ़िज़ मुहम्मद इब्राहीम आबिद साहब मुरब्बी सिलसिला, मुकर्रम शेख़ अबू बकर जार्ज साहब मुल्लिम सिलसिला, लाईबेरिया और मुकर्रमा समीना भन्नो साहिबा पत्नी डाक्टर फ़ज़ल महमूद भन्नो साहब आफ़ लाईबेरिया का सदवर्णन फ़रमाया और उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने का एलान फ़रमाया और इन मृतकों की मगफिरत और दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ
يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब